प्रश्न नाटक के लक्षण बताते हुए नाट्कोत्पत्ति सम्बन्धी विभिन्नताओं की समीक्षा करें।

(वर्ग : 4) प्रथमपत्र, खण्ड क

प्रश्न : 4 नाटकस्य लक्षणं विलिख्य नाटकोत्पत्तिसम्बन्धी विभिन्नमतानां समीक्ष्यताम्। 1×60 = (60)

उत्तरम् :- नट् धातु में ण्वुल्तृचौ सूत्र से ण्वुल् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, स्वादिकार्य करने पर नाटक शब्द बनता है। इसे ही रूपक भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें रूप का आरोप-प्रत्यारोप किया जाता है।

"रूपारोपात्तु रूपकम्।"

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने नाटक के लक्षण को प्रस्तुत करते हुए लिखा है-

'नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात् पञ्चसंधिसमन्वितम्।

गोपुच्छाग्रसमाग्रं तु बन्धनं तस्य कीर्तितम्॥"

अर्थात् नाटक की कथावस्तु रामायण, महाभारत या इतिहास पुराणादि से प्रसिद्ध होनी चाहिए, तथा मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और निर्वहण इन पाँचों संधियों से युक्त होना चाहिए। शृंगारादि अनेक रसों से युक्त सुख-दुःख की अनुभूति कराने वाला, अधिकतम दस तथा न्यूनतम पाँच अंकों वाला नाटक होता है। इसका नायक किसी प्रख्यात वंश, धीरोदात्त, प्रतापी, दिव्यादिव्य आदि गुणों से युक्त होना चाहिए। शृंगार या वीर में से कोई एक रस प्रधान होता है, तथा अन्य सभी रस गौण होते हैं। निर्वहण संधि में अद्भुत घटना का समायोजन होना चाहिए। इसमें कुल चार या पाँच पुरुष प्रधान कार्य के सम्पादन में संलग्न रहते हैं तथा गोपुच्छ के अग्र भाग के समान इसके अंकों को

PANINI CLASSES

68

Scanned with CamScanner

समायोजित किया जाता है।

नाटकों के निर्माण की परम्परा बहुत पुरानी है। आदिकाल से ही भारतीय जन-जीवन में मनोरंजन के लिये नाटकों को श्रेष्ठ माध्यम के रूप में अपनाया जाता रहा है। नाटकों की उत्पत्ति से सम्बन्धित कुछ प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित हैं-

① परम्परागत द्युलोकवाद (भरत) भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में बताया गया है कि सांसारिक मनुष्यों को अत्यन्त खिन्न देखकर इन्द्रादि देवताओं ने ब्रह्मा के पास जाकर ऐसे वेद के निर्माण की प्रार्थना की, जिससे वेद के अनधिकारी स्त्री, शूद्रादि सभी लोगों का मनोरंजन हो सके। यह सुनकर ब्रह्मा जी ने सांसारिक जीवों के मनोरंजनार्थ 'नाट्य' नामक पंचमवेद को प्रकट किया। इसके लिए ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से पाठ्य, यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से संगीत, अथर्ववेद से रस लेकर नाट्य कला की सृष्टि की। इसमें भगवान् शंकर ने ताण्डवनृत्य, पार्वती ने लास्य नृत्य तथा विष्णु ने चारों वृत्तियों को समावेश करके, ब्रह्मा ने रंगमंच का निर्माण किया। सर्वप्रथम इन्द्रध्वज पर्व पर 'त्रिपुरदाह' एवं समुद्रमंथन नामक नाटकों का अभिनय किया। ब्रह्मा जी ने नाटकों की सम्पन्नता हेतु आचार्य भरत मुनि को सौ अप्सराएँ भी समर्पित की। भरतमुनि ने उन सबको नाट्यकला में प्रशिक्षित करके इस कला को मृत्युलोक पर्यन्त पहुँचाने का दायित्व स्वीकार किया।

② धार्मिक भावना या मृतकपूजावाद (डॉ० रिज्वे) डॉ० रिज्वे →

Scanned with CamScanner

का विचार है कि सम्पूर्ण विश्व में नाटकों की उत्पत्ति मृत आत्माओं के प्रति उद्भूत श्रद्धा से सम्बद्ध है। इनकी मान्यता है कि मृत वीर-पुरुषों के शव पहले सुरक्षित रखे जाते थे और उनके श्राद्ध के दिन उनकी वीरतापूर्ण जीवनी का प्रदर्शन होता था। उसी परम्परा को भारत में "रामलीला" और "कृष्णलीला" के साथ जोड़कर यह निष्कर्ष निकाला है कि ये वीरपूजा ही ध्वंसावशेष है। भारतीय मत में (5)
डॉ॰ रिज्वे का यह मत अत्यन्त हास्यास्पद है।

(3) <u>मे पोलवाद</u> - (डॉ॰ कीथ) डॉ॰ ए॰ बी॰ कीथ ने ऋतु परिवर्तन के समय होने वाले उत्सवों तथा नृत्यगान से नाटकों की उत्पत्ति स्वीकार किया है। पाश्चात्य जगत् में मई का महीना अत्यन्त आनन्दप्रद होता है। उस में लोग नाचते गाते हैं। (6)
इतना ही नहीं ये लोग एक लम्बा बाँस गाड़कर उसके नीचे सभी स्त्री पुरुष एकत्र होकर नृत्य करते हैं। भारतवर्ष में इन्द्रध्वज का उत्सव भी लगभग उसी प्रकार की पूजा करता था। उस सिद्धान्त में दोष है कि मे पोल बसंत ऋतु में होता है जब कि इन्द्रध्वज का पर्व वर्षा ऋतु के अंत में हुआ करता है। अतः भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह मत उचित नहीं है।

(4) छायानाटकवाद :- डॉ॰ स्टेन कोनो का मानना है कि भारतवर्ष में पहले छायानाटक बहुत प्रसिद्ध था। इन छाया नाटकों में रामायण तथा →

महाभारत के आख्यानों को मिलाकर नाटकों की कथा-वस्तु तैयार की गयी। डॉ० कोनो का यह मत ठीक नहीं लगता है, क्योंकि डॉ० कोनो ने जिन प्राणियों का उल्लेख किया है, वे सभी महाभाष्य के समकालीन या उसके बाद के हैं। जबकि महाभाष्य काल तक नाटकों का विकास हो चुका था। अतः कोनो का यह मत अनुपयुक्त है।

⑤ पुत्तलिका नृत्यवाद :- जर्मन् विद्वान् डॉ. पिशेल ने कहा - पुतलीनृत्य से नाटकों की उत्पत्ति स्वीकार की है। डोरी पकड़कर पुतलियों को नचाने वाला व्यक्ति सूत्रधार कहलाता था। भारतीय नाट्य के निर्देशक को सूत्रधार कहने का तात्पर्य भी यही हो सकता है। इससे रस-भाव-संवलित भारतीय नाटकों की उत्पत्ति मानना पूरी तरह निराधार है।

⑥ संवाद - सूक्त वाद :- अनेक भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वान् नाटकों की उत्पत्ति वेदमूलक मानते हैं। ऋग्वेद में ऐसे अनेक सूक्त हैं जिनमें एक से अधिक वक्ता हैं। इन सूक्तों को संवाद-सूक्त कहते हैं। कालिदास का विक्रमोर्वशीयम् नाटक ऋग्वेद के 'पुरुरवा-उर्वशी संवाद' पर आधारित प्रतीत होता है।

इस तरह हम देखते हैं पतञ्जलि से पूर्व महाकवि भास से लेकर बीसवीं सदी तक संस्कृत नाटकों की एक विशिष्ट परम्परा दिखाई देती है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न महाकाव्य के लक्षण प्रस्तुत करते हुए किसी एक महाकाव्य का स्थान निर्धारित करें

(वर्ष 4) प्रथमपत्र खण्ड (क)

प्रश्नः 4 महाकाव्यस्य लक्षणं प्रस्तुतयन्कस्यापि एकस्य महाकाव्यस्य स्थानं निर्धारयताम्। (60)

उत्तरम् :- 'महाकाव्य' एक पारिभाषिक शब्द है। महाकाव्य को परिभाषित करते हुए आचार्य विश्वनाथ ने अपने ग्रन्थ "साहित्यदर्पण" में लिखा है–

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
- - - - - - - - - - - - - - - - - - -
नामस्य सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु॥

अर्थात् महाकाव्य सर्गों में निबद्ध होता है। सर्गों की संख्या कम से कम आठ होनी चाहिए। आकार की दृष्टि से न बहुत बड़ा और न अधिक छोटा। एक सर्ग में एक ही छन्द का प्रयोग होना चाहिए। सर्ग के अंत में छन्द का परिवर्तन होना चाहिए, जिससे अगले सर्ग की कथा सूचित होती है। कभी-2 एक ही सर्ग में भिन्न-भिन्न छन्दों के प्रयोग भी हो सकते हैं।

महाकाव्य में एक नायक होता है। वह धीरोदात्तत्वादि गुणों से युक्त होता है। वह क्षत्रिय वंश में उत्पन्न होता है। अथवा एकवंश में उत्पन्न अनेक कुलीन राजाएँ भी नायक होते हैं। शृंगार, वीर या शान्त रस में से कोई एक रस अंगी (प्रधान) होता है शेष रस अंग (अप्रधान) होते हैं। सभी नाट्य संधियों से युक्त, ऐतिहासिक या लोकप्रसिद्ध सज्जनसम्बन्धिनी कथा का वर्णन होना चाहिए। महाकाव्य का आरंभ आशीर्वादात्मक या नमस्कारात्मक या वस्तुनिर्देशात्मक-

66

Scanned with CamScanner

इनमें से किसी एक मंगलाचरण का अनुसरण करना चाहिए। कहीं दुर्जनों की निन्दा तथा सज्जनों की गुणगरिमा का गान भी होता है। कथावस्तु में चतुर्वर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का वर्णन हो, उनमें से किसी एक की फलप्राप्ति अंत में दिखाई जाती है।

जहाँ तक वर्ण्य-विषय का प्रश्न है तो महाकाव्य में सूर्य, चन्द्रमा, दिन, रात, सुबह, शाम, मध्याह्न, मध्यरात्रि, अन्धकार, प्रकाश, मृगया, पर्वत, वन, सरोवर, समुद्र, ऋतु, माह, संभोग, वियोग, मुनि, स्वर्ग, नगर, यज्ञ, संग्राम, यात्रा, विवाह, मन्त्र और पुत्र अभ्युदय का यथासंभव सांगोपांग वर्णन होना चाहिए। इसका नामकरण कवि के नाम से या चरित्र या चरित्रनायक के नाम से होने चाहिए। सर्ग की वर्णनीय कथा-वस्तु के आधार पर सर्ग का नामकरण जाता है।

जहाँ तक किसी एक महाकाव्य पर घटित करने का प्रश्न है तो संस्कृत साहित्य के प्रायः सभी महाकाव्य इनके लक्षण पर पूर्णतः घटित होते हैं। किन्तु महाकवि माघ का शिशुपालवध एक उत्कृष्टकोटि का महाकाव्य है। जिसमें सारे लक्षण घटित होते हैं। इसमें माघ ने सभी अनिवार्य तत्त्वों का वर्णन किया है तभी तो विद्वानों की बीच यह उक्ति है-

काव्येषु माघः कविषु कालिदासः।

शिशुपालवध 20 सर्गों में निबद्ध है। इसके नायक भगवान् श्रीकृष्ण हैं जो धीरोदात्तत्वादि गुणों से युक्त हैं। इसके प्रथमसर्ग में वंशस्थ नामक छन्द है।

अंत में छन्द परिवर्तित कर दिये गये हैं। तथा अगले सर्ग की कथा वस्तु का निर्देश किया गया है। आकाशमार्ग से उतरते हुए नारद का वर्णन अतीव मनोहारी है। नारद इन्द्र का सन्देश लेकर द्वारिका में विराजमान भगवान् श्रीकृष्ण के पास आते हैं। श्रीकृष्ण नारद का भव्य स्वागत करता है। इसके बाद इन्द्र का सन्देश सुनाते हुए कहते हैं कि शिशुपाल बहुत ही अत्याचारी एवं उद्दण्ड है। ऋषि-मुनियों को सता रहा है। अतः उसका वध करना आप का परमधर्म है। क्योंकि गीता में भी कहा गया है—

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

अतः धर्म की स्थापना के लिए ये पृथिवी पर आप का अवतार हुआ है। उस समय बलराम एवं उद्धव जी वहीं बैठे हैं। उसी समय युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ का निमन्त्रण पत्र प्राप्त होता है। सभी आपस में सलाह मशविरा करते हैं कि पहले क्या करना चाहिए। बलराम का कहना है कि शत्रु रोग के समान होता है, अतः शीघ्र ही शिशुपाल पर आक्रमण कर देना चाहिए परन्तु उद्धव जी युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में चलने का सलाह देते हैं। श्रीकृष्ण उद्धव जी का समर्थन करते हुए अपने दल-बल, रानियों तथा मंत्रियों के साथ राजसूय यज्ञ में शामिल होने के लिए निकल पड़ते हैं। रास्ते में रैवतक पर्वत है। शाम हो जाता है, एक तरफ सूर्यास्त तो दूसरी तरफ चन्द्रोदय का ऐसा

वर्णन किया है कि मानो वह कालिदास से भी उपमा के प्रयोग में आगे बढ़ गया है। अर्थगौरव में तो वह भारवि से कई कदम आगे है और सैनिकों की यात्रा में तो पदलालित्य की झड़ी लगा दी है। तभी तो इसके सन्दर्भ यह उक्ति है-

"माघे सन्ति त्रयो गुणाः।"

यहाँ पर कवि ने वनविहार एवं सरोवर स्नान, का ऐसा सजीव वर्णन किया है कि मानों संगम वहीं अवतरित हो गये हों। पूरा दिन वन-भ्रमण करते हैं, फिर रात्रि में मद्यपान करके सम्भोग सुखों में लीन हो जाते हैं। अगले दिन सुबह तरोताजा होकर युधिष्ठिर के यज्ञ सभास्थल में पहुँचते हैं। तब किसी विशिष्ट व्यक्ति की पूजा का प्रश्न उठ खड़ा होता है। भीष्मपितामह की सम्मति से युधिष्ठिर श्रीकृष्ण की पूजा करने के लिए आगे बढ़ता है। इस पर शिशुपाल क्रोधित होकर युद्ध के लिये ललकारता है। फिर श्रीकृष्ण के सेनाओं के साथ भयंकर युद्ध होता है। अंत में भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल के शिर को काट दिया। मृत शिशुपाल के शरीर से एक तेजपुँज निकलकर कृष्ण के शरीर में प्रविष्ट हो जाता है।

इस तरह हम देखते हैं कि आचार्य विश्वनाथ द्वारा निर्धारित महाकाव्य के जितने लक्षण बताये गये है। वे सभी लक्षण एवं वर्ण्य-विषय शिशुपालवध महाकाव्य में घटित होते हैं। ~~तभी तो~~ इस महाकाव्य की विश्वसनीयता इस सूक्ति से भी हो जाती है—

मेघे माघे गतं वयः।